दूसरी भाषा को सीखने-सिखाने के अनुभव

आकाश शांडिल्य

विद्यार्थियों को दूसरी भाषा के तौर पर अँग्रेज़ी भाषा सिखाने का सबसे अच्छा तरीक़ा कौन-सा है? इसका जवाब जानने के लिए लेखक ने चौथी और पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ उनकी मूल भाषा के गीतों और कविताओं का उपयोग करने का एक शैक्षणिक प्रयोग किया। इस दौरान उन्होंने समुचित व्याकरण शिक्षण और बातचीत के अवसरों के बीच सन्तुलन बनाने की कोशिश की।

अँग्रेज़ी भाषा की कक्षाओं में शिक्षण के तरीक़े के रूप में अनुवाद को एक उपेक्षा की नज़र से देखा जाता है। लेकिन भारतीय कक्षाओं में अनुवाद और व्याकरण पढ़ाने का, काफ़ी इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि अधिकांश विद्यार्थियों और शिक्षकों का अँग्रेज़ी से परिचय बहुत सीमित होता है। वैसे दूसरी भाषा सीखने (Second Language Acquisition) पर किए गए हालिया शोध में व्याकरण के महत्त्व पर फिर से विचार किया गया है। अब कई शोधकर्ता मानने लगे हैं कि द्वितीय भाषा की कक्षाओं में व्याकरण शिक्षण को नज़रन्दाज़ नहीं करना चाहिए। वे शिक्षक भी ऐसा मानते हैं जो एक ऐसे परिवेश में द्वितीय भाषा के तौर पर अँग्रेज़ी पढ़ा रहे हैं, जहाँ अँग्रेज़ी का माहौल ही नहीं होता, और इसलिए वे लक्षित भाषा को पढ़ाने के लिए व्याकरण शिक्षण पर निर्भर रहते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, बाड़मेर ज़िले के एक दूर-दराज़ के गाँव के सरकारी विद्यालय में चौथी कक्षा के 5 और पाँचवीं कक्षा के 12 विद्यार्थियों के साथ एक सप्ताह की योजना तैयार की गई थी। इस योजना का उद्देश्य यह था कि द्वितीय भाषा को सिखाने के लिए कक्षा में पर्याप्त व्याकरण शिक्षण व बातचीत के अवसरों के बीच सन्तुलन बनाया जाए, और पारम्परिक व्याकरण अनुवाद पद्धति का इस्तेमाल न किया जाए। अतः यह योजना बनाई गई कि विद्यार्थियों के साथ कुछ मारवाड़ी लोकगीतों का अनुवाद किया जाए, और इस दौरान भाषा संरचनाओं पर उनके साथ चर्चा की जाए ताकि वे बातचीत में उन संरचनाओं का इस्तेमाल कर पाएँ। अँग्रेज़ी भाषा में दक्षता की बात करें तो 17 में से 15 विद्यार्थी अँग्रेज़ी वर्णमाला से परिचित थे, और उनमें से 14 अपने आस-पास की चीज़ों के नाम अँग्रेज़ी में बता सकते थे। लेकिन उनमें से किसी ने भी अँग्रेज़ी वाक्यों का इस्तेमाल नहीं किया था। इस प्रयोग में 17 में से 2 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे।

> **“अब कई शोधकर्ता मानने लगे हैं कि द्वितीय भाषा की कक्षाओं में व्याकरण शिक्षण को नज़रन्दाज़ नहीं करना चाहिए।”**

हमने योजना को कैसे लागू किया?

इस प्रक्रिया की शुरुआत एक ऐसी कक्षा से हुई जिसमें पड़ोस में होने वाली शादी के कारण उपस्थिति कम थी। उपस्थित 5 विद्यार्थियों के साथ कुछ मारवाड़ी और हिन्दी गीत / कविताएँ, जैसे 'धोरा रे धोरा में म्हारी रेलगाड़ी चाले', 'म्हारो मन करे मावड़ी' और 'इक बुढ़िया ने बोया दाना' पर काम किया गया। इनमें से 'म्हारो मन करे मावड़ी' को दो बार गाया गया, और एक दीवार पर चिपका दिया गया। विद्यार्थियों को बताया गया कि हम इस गीत का अँग्रेज़ी में अनुवाद करेंगे। अनुवाद के लिए इस कविता को चुनने का कारण यह था कि इसमें कुछ बुनियादी अँग्रेज़ी संरचनाओं को दोहराया गया था। विद्यार्थियों से कहा गया कि वे अगले दिन अपने अन्य सहपाठियों को यह कविता सुनाने के लिए तैयार रहें। अगले दिन जब कक्षा में ज़्यादा विद्यार्थी उपस्थित थे तो उनसे कविता को दो बार सुनाने के लिए कहा गया, जिसमें से एक बार उन्हें चार्ट की ओर इशारा भी करना था।

जब सभी पाठ्य (टेक्स्ट) से परिचित हो गए तो उनसे दिए गए पाठ्य के अर्थ पर चर्चा करने के लिए कहा गया। विद्यार्थी एक समूह के रूप में पूरी कविता समझा पाए। इस अभ्यास के बाद पाठ्य का अनुवाद करने का काम शुरू हुआ। पहला वाक्यांश था 'म्हारो मन करे...'। शिक्षक ने इसके अनुवाद के लिए 'I wish...' वाक्यांश दिया, और विद्यार्थी 'कई-कई...' का अनुवाद 'many' के रूप में कर पाए। 'हो जाओ' के लिए 'become' का प्रयोग किया गया।

अनुवाद ब्लैकबोर्ड पर भी लिखा गया जिसे विद्यार्थियों ने अपनी नोटबुक में लिख लिया। इसके बाद विद्यार्थियों से कहा गया कि 'I wish...' वाक्यांश का प्रयोग अपने वाक्यों में करें जिनमें वे अपनी इच्छाएँ बताएँ। विद्यार्थियों ने चित्र 1 में दिखाए गए वाक्य बनाए, जिन पर बाद में कक्षा में चर्चा की गई। विद्यार्थियों को 'I wish I become...', 'I wish I could...', और 'I wish I had...' जैसे वाक्यांश दिए गए। इनका प्रयोग करके उन्होंने वाक्य बनाए जिनमें उन्होंने अपनी इच्छाओं के बारे में बताया। 'Have' और 'can' के इस्तेमाल पर भी चर्चा की गई। इससे वे यह समझ पाए

कि 'can' के बाद कोई क्रिया आएगी और 'have' के बाद कोई चीज़ (संज्ञा) आएगी।

जो 12 विद्यार्थी उपस्थित थे, उनमें से 3 को इस काम के लिए शिक्षक की मदद की ज़रूरत पड़ी। इस अभ्यास को करते समय शिक्षक ने महसूस किया कि ज़्यादातर विद्यार्थी दी गई संरचनाओं में तो अपने इनपुट आसानी से जोड़ रहे थे, लेकिन अगर उन्हें ख़ुद इन संरचनाओं का उपयोग करना है तो 'I wish I have' को 'I wish…' और 'I have…' में तोड़ना होगा तथा 'I can...', 'I am…' और 'I have…' पर काम करना होगा, इससे विद्यार्थियों को आसानी होगी।

अगले दिन विद्यार्थियों ने कविता और अनुवाद को सुधारना, और धीरे-धीरे अगली पंक्ति का अनुवाद करना शुरू कर दिया। चूँकि कविता कवि की इच्छाओं को विस्तार से बताती है, इसलिए विद्यार्थी 'I wish…' से एक नया वाक्य बनाने की शुरुआत कर पाए।

अन्य शब्दों से भी विद्यार्थी परिचित थे, और वे उनका अँग्रेज़ी में अनुवाद कर सके, सिवाय 'धोरा' के, जिसका मतलब है रेत का टीला। इस वाक्य का अनुवाद करते समय शिक्षक ने विद्यार्थियों के साथ अँग्रेज़ी की सब्जेक्ट-वर्ब-ऑब्जेक्ट (SVO) संरचना पर भी चर्चा की। उन्हें बताया कि इन वाक्यों में जो काम कर रहा है वह पहले आएगा, काम दूसरे स्थान पर आएगा, और जो कुछ भी बाक़ी है वह काम के बाद रखा जाएगा। कक्षा ने 'I am reading a book' जैसे वाक्यों की सहायता से इसका अभ्यास भी किया। इसका अभ्यास अनुवाद पद्धति की मदद से किया गया था, और ऐसा लग रहा था कि विद्यार्थी अगले वाक्यों की सही व्याकरणिक संरचना को समझ पा रहे थे। अन्त में, विद्यार्थियों को तीन वाक्य बनाने और उनका अनुवाद करके अपनी नोटबुक में लिखने का काम दिया गया।

अगले दिन पाठ्य की एक और पंक्ति का अनुवाद किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने 'I am…' की जगह 'He / She / Name is…' का प्रयोग करके कुछ नए वाक्य बनाने का अभ्यास किया। इस अभ्यास के लिए चौथी कक्षा की वर्कबुक की वर्कशीट 56 और पाँचवीं कक्षा की वर्कबुक का भी उपयोग किया गया। वर्कशीट में दी गई गतिविधि के अनुसार विद्यार्थियों को अपने दोस्तों से कुछ प्रश्न पूछकर उनके लिए एक परिचय कार्ड तैयार करना था। जब विद्यार्थियों को स्वयं प्रश्न बनाने में कठिनाई हुई तो उन्हें वर्कशीट में दिए गए प्रश्न समझाए गए, और अपने दोस्तों से ये प्रश्न अँग्रेज़ी में पूछने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस प्रकार एक निर्देशित लेखन अभ्यास के माध्यम से सीखी हुई संरचनाओं का बातचीत में उपयोग करने में वर्कशीट से काफ़ी सहायता मिली।

अभ्यास के लिए अन्य गतिविधियाँ

इसी प्रकार अगले दिनों में कविता की शेष पंक्तियों का भी अनुवाद किया गया। कविता की एक पंक्ति का अनुवाद करने और पिछले पाठ्य को दुबारा जाँचने के साथ-साथ, विद्यार्थियों ने कुछ संरचनाओं का अभ्यास किया, शब्दावली खेल खेले, और बचे समय में अपने स्वयं के वाक्यों का निर्माण और अनुवाद किया।

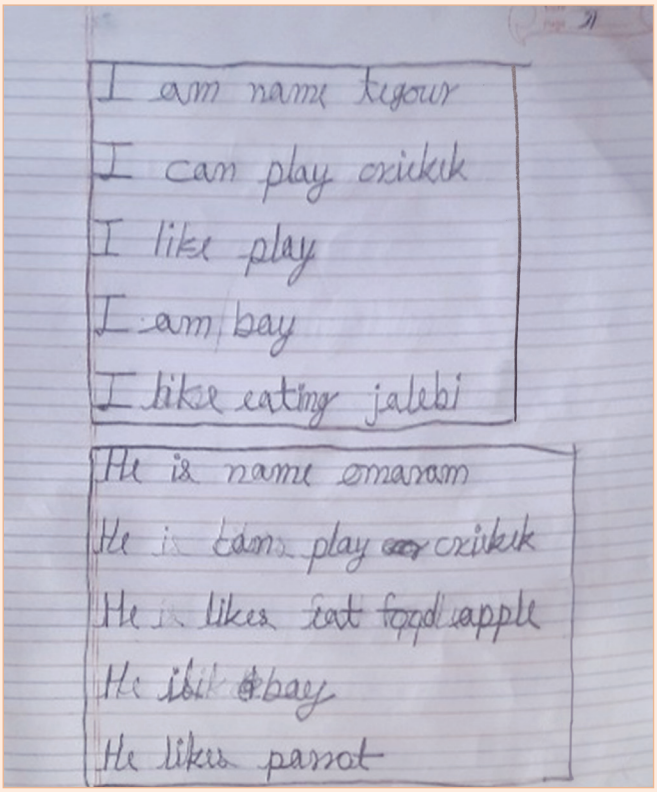

चित्र 1 : विद्यार्थी के काम का नमूना

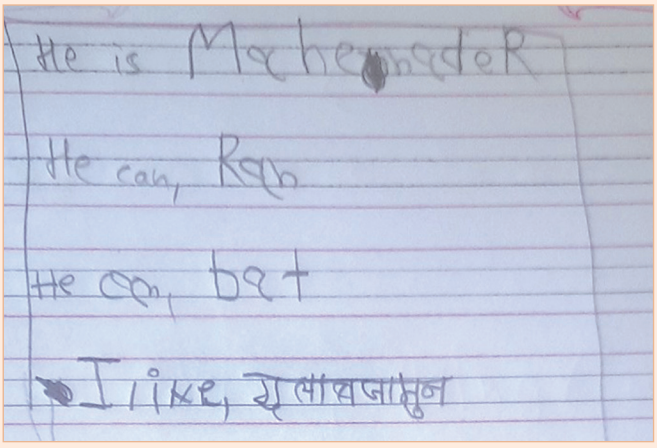

चित्र 2 : विद्यार्थी के काम का नमूना

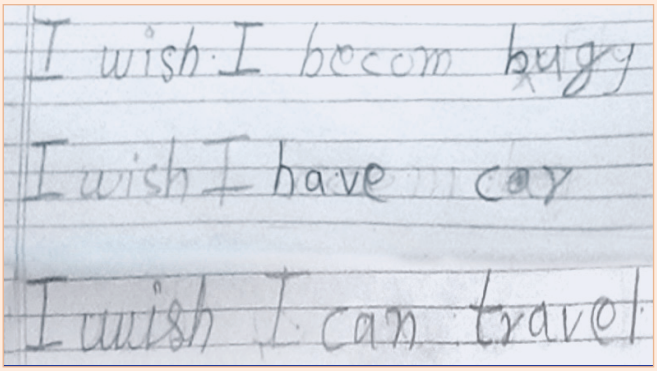

चित्र 3 : विद्यार्थी के काम का नमूना

इन अभ्यासों के दौरान विद्यार्थियों को अपने साथियों के उत्तर या पिछली चर्चाओं के उदाहरणों को देखकर अपनी ग़लतियाँ सुधारने के लिए प्रोत्साहित किया गया। तीन विद्यार्थी ज़रा धीमी गति से काम करते थे, इसलिए शिक्षक ने उनकी मदद की। बाक़ी विद्यार्थी अपने काम में लगे रहे। इन अभ्यासों को करते हुए कक्षा में एक शब्द दीवार भी बनाई, जहाँ सभी नए सीखे गए शब्दों को लिखा गया। इसके साथ ही, नई वाक्य संरचनाओं के लिए वाक्य पट्टियाँ (स्ट्रिप्स) भी बनाई गईं।

आकलन

छठे दिन कविता का अनुवाद पूरा हुआ। इसके बाद विद्यार्थियों का एक छोटा-सा आकलन यह जानने के लिए किया गया कि उनमें से कितनों ने इन संरचनाओं का स्वतंत्र रूप से उपयोग करना सीख लिया है। विद्यार्थियों से कहा गया कि वे अपने बारे में और अपने दोस्तों के बारे में पाँच वाक्य लिखें। जैसे, वे कौन हैं; वे क्या कर सकते हैं (मसलन, वे दौड़ सकते हैं, लेकिन उड़ नहीं सकते); उन्हें क्या पसन्द है; आदि। आकलन के लिए लगभग 11 विद्यार्थी मौजूद थे। इनमें से दो ये कार्य नहीं कर पा रहे थे, अतः शिक्षक ने उनकी मदद की। चार विद्यार्थी बिना किसी ग़लती के इन कार्यों को कर पाए, जबकि अन्य पाँच को अपने उत्तरों की दुबारा जाँच करनी पड़ी ताकि वे ख़ुद उन्हें सही कर सकें। जिस विद्यार्थी का उत्तर चित्र 2 में दिखाया गया है, वह संरचनाओं के सही इस्तेमाल को समझ गया था, लेकिन एक अन्य विद्यार्थी (चित्र 3) अभी भी उनका इस्तेमाल करने की कोशिश में लगा हुआ है।

कुछ विचार

इस योजना पर विद्यार्थियों के साथ काम करते समय व्याकरण पढ़ाने, अनुवाद और बातचीत करने के बीच सन्तुलन के बारे में निम्नलिखित विचार सामने आए :

1. प्रासंगिक पाठ्य पर काम करना

अपने आस-पास के माहौल से लिए गए पाठ्य का अनुवाद करने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास आया। इससे वे प्रेरित भी हुए क्योंकि वे मूल कविता के सन्दर्भ को अच्छी तरह से समझ पाए। अपनी स्थानीय भाषा के शब्दों के इस्तेमाल से इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने में मदद मिली। इससे उन्हें नए शब्दों और वाक्यांशों को जल्दी से समझने में मदद मिली।

2. अनुवाद का कार्य

विद्यार्थियों को अनुवाद करने का कार्य अच्छा लग रहा था जिससे वे नई चीज़ें सीखने के लिए उत्सुक हो रहे थे। उनमें से कई नए पाठ्य को समझने की कोशिश भी कर रहे थे। तीन विद्यार्थियों को छोड़कर बाक़ी सभी अनुवादित पाठ्य को पढ़ सकते थे, और उसे काफ़ी हद तक समझ भी सकते थे। उनमें से कुछ ने ख़ास शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ या अनुवाद के बारे में प्रश्न भी पूछे। लगता था कि अनुवाद का यह कार्य उन्हें दूसरी भाषा के बारे में अधिक जानने के लिए प्रेरित कर रहा है। अन्त में, विद्यार्थियों ने यह प्रस्ताव भी रखा कि हम पहले दिन वाले सेट से एक और कविता का अनुवाद करें।

3. शब्दावली

स्थानीय सन्दर्भ और मारवाड़ी कविता से जुड़कर विद्यार्थी नई शब्दावली को अधिक आसानी से समझ सके। अधिकांश विद्यार्थी 'to become', 'to wish', और 'to ride' जैसी क्रियाओं के अर्थ और इस्तेमाल को भी समझ सके।

4. संरचना पर ज़ोर

कविता से ली गई कुछ संरचनाओं के अभ्यास पर ज़ोर देने से विद्यार्थियों में वाक्य निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने में मदद मिली। व्याकरणिक संरचना पर स्पष्ट चर्चा केवल अँग्रेज़ी की SVO संरचना को समझाने के लिए की गई थी। इसके बाद विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे ख़ुद अपने उत्तरों को सही करें। पाँच दिनों के बाद, थोड़ी-सी मदद से, वे अँग्रेज़ी में अपनी बात कह पा रहे थे। उदाहरण के लिए, जब विद्यार्थियों ने कहा, "हम खेलना चाहते हैं", तो उनसे कहा गया कि वे अँग्रेज़ी में वही बात कहें, और वे "We want to play" जैसा कुछ बोल पाए। ये अभ्यास तब किए गए जब कक्षा में बातचीत के दौरान ऐसे वाक्य सामने आए।

चित्र 4 : प्रिंट-रिच कक्षा और ख़ुश छात्रा

5. अनुवाद की सीमाएँ

विद्यार्थियों ने ख़ुद अपने वाक्य बनाए और उनका अनुवाद किया। इस प्रक्रिया ने उन्हें कुछ अँग्रेज़ी संरचनाओं (मुख्य रूप से SVO संरचना) और अवयवों (सही सर्वनाम, सहायक क्रिया, रूप, आदि) के सही इस्तेमाल और उन पर विचार करने में मदद की। हालाँकि, जब उनसे आख़िरी दिन के बारे में एक छोटा-सा विवरण लिखने के लिए कहा गया तो अधिकतर विद्यार्थियों ने कुछ निश्चित संरचनाओं का पालन किया। इससे पता चलता है कि उनका ध्यान सही संरचनाओं पर था, न कि इस बात पर कि वे वास्तव में क्या कहना चाहते हैं। इससे यह संकेत भी मिलता है कि विद्यार्थी अभी तक अँग्रेज़ी में सोच नहीं पा रहे थे। वे अपनी मातृभाषा में सोच रहे थे, और फिर उसे अँग्रेज़ी में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे थे। अगर विद्यार्थियों को सीधे दूसरी भाषा में सोचने में सक्षम बनाना है तो यह ज़रूरी है कि बातचीत की

अँग्रेज़ी से उनका सम्पर्क बढ़े, साथ ही उन्हें अँग्रेज़ी में बोलने और लिखने के अधिक अवसर दिए जाएँ।

6. संरचनाओं का विस्तार

जब विद्यार्थियों को अन्तिम दिन लिखने का कार्य दिया गया तो कुछ विद्यार्थी अपने ही तरीक़े से अतिरिक्त विवरणात्मक शब्दों का उपयोग करते दिखे। उदाहरण के लिए, वाक्यों का विस्तार करते हुए एक विद्यार्थी ने लिखा, "He likes to eat food apple"; या एक अन्य विद्यार्थी, जिसने अपने लेखन कार्य में कुछ ग़लतियाँ की थीं, ने लिखा, "He can book read"। इस तरह के विस्तार कक्षा की बातचीत में भी देखे गए। इससे यह संकेत मिलता है कि हालाँकि विशिष्ट और सीमित संरचनाओं पर बहुत अधिक ज़ोर दिया गया था, फिर भी ये विद्यार्थी अपनी गति से, अपने तरीक़े से भाषा सीख रहे थे।

निष्कर्ष

संरचना पर ज़ोर देते हुए पाठ्य के अनुवाद पर काम करने से इन विद्यार्थियों को संवादात्मक अँग्रेज़ी सीखने में मदद मिली। अभी तक जो विद्यार्थी केवल अँग्रेज़ी के शब्दों का इस्तेमाल करते थे, वे अब अँग्रेज़ी में अपने विचार व्यक्त करने के बारे में सोचने लगे हैं। जहाँ तक संवादात्मक प्रवाह (communicative fluency) की क्षमता प्राप्त करने का सवाल है, यह एक लम्बी प्रक्रिया लगती है और शिक्षण तथा सन्दर्भों की सीमाओं को देखते हुए अनुवाद और बुनियादी व्याकरण जैसे अभ्यासों की मदद से पढ़ाना विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता है। दूसरी ओर, ये अभ्यास भी तभी पूर्ण कहे जा सकते हैं जब इनके साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ भी जोड़ी जाएँ जो विद्यार्थियों को सही संरचनाओं की चिन्ता किए बग़ैर भाषा का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करती हों। छठे दिन विद्यार्थियों को जो लेखन कार्य दिया गया था, उसमें कुछ विद्यार्थियों ने मिश्रित भाषा का उपयोग किया, और सही व्याकरणिक संरचनाओं पर ध्यान दिए बिना अपने ही तरीक़े से अपने बारे में लिखने का प्रयास किया। यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि इस प्रकार के लेखन कार्य के लिए व्याकरण की शुद्धता की कोई पाबन्दी न लगाई जाए, और इन विद्यार्थियों को धीरे-धीरे अपनी भाषा के प्रयोग पर विचार करके अपनी ग़लतियों को सुधारने का अवसर दिया जाए।

> **स्थानीय सन्दर्भ और मारवाड़ी कविता से जुड़कर विद्यार्थी नई शब्दावली को अधिक आसानी से समझ सके।**

जैसा कि पहले बताया गया है, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, केवल एक सन्तुलित दृष्टिकोण ही उपयोगी प्रतीत होता है। विद्यार्थियों से ऐसे अभ्यास करवाने चाहिए जिनसे वे शुरुआती इस्तेमाल के लिए कुछ संरचनाएँ सीख सकें, और फिर अपनी भाषा पर सोच-विचार कर सकें। साथ ही, उन्हें सटीकता की चिन्ता या भय के बिना दूसरी भाषा में (मौखिक और लिखित रूप में) पूरे पाठ्य से जुड़ने के लिए बहुत सारे अवसर और जानकारी दी जानी चाहिए।

सन्दर्भ

Nassaji, H., & Fotos, S. (2011). *Teaching grammar in second language classrooms: Integrating form-focused instruction in communicative context.* Routledge

आकाश शांडिल्य अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में अँग्रेज़ी के सन्दर्भ व्यक्ति हैं। आप विशेष रूप से अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक क्षमता निर्माण और विषयवस्तु निर्माण पर काम करते हैं।

सम्पर्क : akash.shandilya@azimpremjifoundation.org